तुलसीदास

'कवितावली' के उत्तरकांड से

सो जननी[1], सो पिता, सोइ भाइ, सो भामिनि[2], सो सुतु[3], सो हितु[4] मेरो।
सोइ सगो, सो सखा, सोइ सेवकु, सो गुरु, सो सुरु[5], साहेबु[6] चेरो[7]।।
सो 'तुलसी' प्रिय प्रान समान, कहाँ लौं बनाइ[8] कहौं बहुतेरो[9]।
जो तजि[10] देहको, गेहको[11] नेहु[12], सनेहसों रामको होइ सबेरो[13]।।1।।

मातु-पिताँ जग[14] जाइ[15] तज्यो बिधिहूँ [16] न लिखी कछु भाल[17] भलाई।
नीच, निरादरभाजन[18], कादर[19], कूकर-टूकन[20] लागि ललाई[21]।।
रामु-सुभाउ सुन्यो तुलसीं प्रभुसों कह्यो बारक[22] पेटु खलाई[23]।
स्वारथको परमारथको रघुनाथु सो साहेबु, खोरि[24] न लाई।।2।।

जायो[25] कुल मंगन[26], बधावनो[27] बजायो, सुनि
भयो परितापु पापु जननी-जनकको[28]।
बारेतें[29] ललात-बिललात[30] द्वार-द्वार दीन,
जानत हो चारि फल[31] चारि ही चनकको[32]।।
तुलसी सो साहेब समर्थको सुसेवकु है,
सुनत सिहात[33] सोचु बिधिहू गनकको[34]।
नामु राम! रावरो[35] सयानो[36] किधौं बावरो[37],
जो करत गिरीतें[38] गरु[39] तृनतें[40] तनकको[41]।।3।।

---

1. माता 2. स्त्री, औरत 3. पुत्र 4. हितैषी 5. देवता 6. मालिक, स्वामी 7. नौकर 8. बनाकर 9. बहुत सारा, अधिक 10. त्यागना 11. घर को 12. ममता 13. जल्दी से 14. संसार 15. जन्म देने वाले 16. ब्रह्मा 17. किस्मत 18. निरादर के पात्र 19. कायर 20. कुत्ते की तरह टुकड़े के 21. ललचाना 22. एक बार 23. खाली करके 24. कमी 25. जन्म लेना 26. माँगने वाला 27. बधाई के बाजे 28. माता-पिता को 29. बचपन से 30. ललचाता-बिलबिलाता 31. चार फल (अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष) 32. चने को 33. ईर्ष्या करना 34. ज्योतिषी को 35. आपका 36. चतुर 37. बावला (मूर्ख) 38. पर्वत से 39. बड़ा 40. घास से 41. छोटे को, तुच्छ को

न मिटै भवसंकटु[42], दुर्घट[43] है तप, तीरथ जन्म अनेक अटो[44]।
कलिमें न बिरागु, न ग्यानु कहूँ, सबु लागत फोकट[45] झूठ-जटो।।
नटु[46] ज्यों जनि पेट-कुपेटक[47] कोटिक चेटक[48]-कौतुक-ठाट ठटो।
तुलसी जो सदा सुखु चाहिअ तौ, रसनाँ [49] निसिबासर[50] रामु रटो।।4।।

खेती न किसानको, भिखारीको न भीख, बलि[51],
बनिकको[52] बनिज[53], न चाकरको[54] चाकरी।
जीविका बिहीन लोग सीद्यमान[55] सोच बस,
कहैं एक एकन सों 'कहाँ जाई, का करी?'
बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत[56],
साँकरे[57] सबै पै, राम! रावरें कृपा करी।
दारिद-दसानन[58] दबाई दुनी, दीनबंधु!
दुरित-दहन[59] देखि तुलसी हहा करी।।5।।

धूत[60] कहौ, अवधूत[61] कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।
काहूकी बेटीसों, बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ।।
तुलसी सरनाम गुलामु है रामको, जाको, रुचै सो[62] कहै कछु ओऊ।
माँगि कै खैबो, मसीतको[63] सोइबो, लैबोको एकु न दैबेको दोऊ।।6।।

ईसनके ईस[64], महाराजनके महाराज,
देवनके देव, देव! प्रानहुके प्रान हौ।
कालहूके काल, महाभूतनके महाभूत,
कर्महूके करम, निदानके निदान[65] हौ।।
निगमको[66] अगम[67], सुगम तुलसीहू-सेको

---

42. सांसारिक कष्ट 43. कठिन 44. घूमना, भटकना 45. सारहीन 46. नर्तक 47. पेटरूपी कुत्सित पिटारा 48. इंद्रजाल, जादू 49. जीभ 50. रात-दिन 51. बलि जाना 52. वैश्य को 53. व्यापार 54. मजदूर को 55. दुखी, संतप्त 56. देखा जाना 57. संकट में 58. दरिद्रता रूपी रावण 59. पाप की ज्वाला 60. धूर्त 61. औघड़ 62. जो अच्छा लगे 63. मस्जिद में 64. ईश्वर 65. कारण 66. वेद के लिए 67. अनजान

एते मान सीलसिंधु[68], करुनानिधान हौ।
महिमा अपार, काहू बोलको न वारापार[69],
बड़ी साहबीमें नाथ! बड़े सावधान हौ।।7।।

संकर-सहर[70] सर, नरनारि बारिचर[71]
बिकल[72], सकल, महामारी माजा[73] भई है।
उछरत[74] उतरात[75] हहरात[76] मरि जात,
भभरि भगात[77] जल-थल मीचुमई[78] है।।
देव न दयाल, महिपाल न कृपालचित,
बारानसीं बाढ़ति अनीति नित नई है।
पाहि[79] रघुराज! पाहि कपिराज[80] रामदूत!
रामहूकी बिगरी तुहीं सुधारि लई है।।8।।

'रामचरितमानस' के बालकांड से

रामकथा सुंदर कर तारी[81]। संसय बिहग[82] उड़ावनिहारी।।
रामकथा कलि बिटप[83] कुठारी[84]। सादर सुनु गिरिराजकुमारी[85]।।
राम नाम गुन चरित सुहाए [86]। जनम करम अगनित[87] श्रुति[88] गाए।।
जथा[89] अनंत राम भगवाना। तथा कथा करीति गुन नाना।।
तदपि जथा श्रुत[90] जसि मति[91] मोरी। कहिहउँ देखि प्रीति अति तोरी।।
उमा प्रस्न तव सहज सुहाई। सुखद संतसंमत मोहि भाई[92]।।
एक बात नहिं मोहि सोहानी[93]। जदपि मोह बस कहेहु भवानी[94]।।
तुम्ह जो कहा राम कोउ आना[95]। जेहि श्रुति गाव धरहिं मुनि ध्याना।।

---

68. शील के सागर 69. ओर-छोर 70. शंकर का नगर अर्थात काशी 71. जलीय जीव 72. व्याकुल 73. जलीय जीवों को होने वाली एक प्रकार की बीमारी 74. उछलना 75. तैरना 76. भयभीत होना 77. भागना 78. मृत्युमय 79. रक्षा कीजिए 80. हनुमान जी 81. ताली 82. पक्षी 83. वृक्ष 84. कुल्हाड़ी 85. पर्वतों के राजा की पुत्री अर्थात पार्वती जी 86. अच्छा लगना 87. अनगिनत 88. वेद 89. जैसे 90. सुनना 91. बुद्धि 92. अच्छा लगना, भा जाना 93. अच्छा लगना 94. पार्वती जी 95. दूसरा

दो. कहहिं सुनहिं अस[96] अधम नर ग्रसे जे मोह पिसाच[97]।
पाषंडी हरि पद बिमुख जानहिं झूठ न साच ।।1।।

अग्य [98] अकोबिद[99] अंध अभागी। काई बिषय [100] मुकुर[101] मन लागी।।
लंपट[102] कपटी[103] कुटिल बिसेषी। सपनेहुँ संतसभा नहिं देखी।।
कहहिं ते बेद असंमत[104] बानी। जिन्ह कें सूझ लाभु नहिं हानी।।
मुकुर मलिन[105] अरु नयन बिहीना। राम रूप देखहिं किमि दीना[106]।।
जिन्ह कें अगुन न सगुन बिबेका। जल्पहिं[107] कल्पित बचन अनेका।।
हरिमाया बस जगत भ्रमाहीं। तिन्हहि कहत कछु अघटित[108] नाहीं।।
बातुल[109] भूत बिबस मतवारे। ते नहिं बोलहिं बचन बिचारे।।
जिन्ह कृत महामोह मद[110] पाना। तिन्ह कर कहा करिअ नहिं काना।।

दो. अस निज हृदयँ बिचारि तजु संसय भजु राम पद।
सुनु गिरिराज कुमारि भ्रम तम[111] रबि कर[112] बचन मम।।2।।

सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा[113]। गावहिं मुनि पुरान बुध[114] बेदा।।
अगुन[115] अरूप[116] अलख[117] अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई।।
जो गुन रहित सगुन सोइ कैसें। जलु हिम[118] उपल[119] बिलग[120] नहिं जैसें।।
जासु नाम भ्रम तिमिर[121] पतंगा। तेहि किमि कहिअ बिमोह प्रसंगा।।
राम सच्चिदानंद दिनेसा[122]। नहिं तहँ मोह निसा लवलेसा[123]।।
सहज प्रकासरूप भगवाना। नहिं तहँ पुनि बिग्यान बिहाना[124]।।
हरष बिषाद ग्यान अग्याना। जीव धर्म अहमिति[125] अभिमाना।।
राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना। परमानंद परेस[126] पुराना।।

---

96. नीच 97. प्रेत 98. अज्ञानी 99. मूर्ख 100. भोग-विलास 101. दर्पण 102. व्यभिचारी 103. छली 104. विरूद्ध 105. गंदा 106. बेचारा 107. कथन, प्रलाप 108. असंभव 109. वात रोग 110. शराब 111. अँधेरा 112. किरण 113. अंतर 114. पंडित, ज्ञानी 115. निगुर्ण 116. निराकार 117. अव्यक्त 118. बर्फ 119. ओला 120. अलग, अंतर 121. अंधकार 122. सूर्य 123. तनिक भी 124. सवेरा, प्रातःकाल 125. गर्व, अविद्या 126. परमेश्वर, परमात्मा

दो॰ पुरुष प्रसिद्ध प्रकास निधि[127] प्रगट परावर[128] नाथ।
रघुकुलमनि मम स्वामि सोइ कहि सिवँ नायउ माथ।।3।।

निज भ्रम नहिं समुझहिं अग्यानी। प्रभु पर मोह धरहिं[129] जड़[130] प्रानी।।
जथा गगन घन[131] पटल[132] निहारी। झाँपेउ[133] भानु[134] कहहिं कुबिचारी।।
चितव[135] जो लोचन[136] अंगुलि लाएँ। प्रगट जुगल ससि[137] तेहि के भाएँ।।
उमा राम बिषइक अस मोहा। नभ तम धूम[138] धूरि[139] जिमि सोहा।।
बिषय करन सुर जीव समेता। सकल एक तें एक सचेता।।
सब कर परम प्रकासक जोई। राम अनादि[140] अवधपति सोई।।
जगत प्रकास्य प्रकासक रामू। मायाधीस ग्यान गुन धामू।।
जासु सत्यता तें जड़ माया। भास[141] सत्य इव[142] मोह सहाया।।
दो॰ रजत[143] सीप महुँ भास जिमि जथा भानु कर बारि[144]।
जदपि मृषा[145] तिहुँ काल सोइ भ्रम न सकइ कोउ टारि[146]।।4।।

एहि बिधि जग हरि आश्रित रहई। जदपि असत्य देत दुख अहई[147]।।
जौं सपनें सिर काटै कोई। बिनु जागें न दूरि दुख होई।।
जासु कृपाँ अस भ्रम मिटि जाई। गिरिजा सोइ कृपाल रघुराई।।
आदि अंत कोउ जासु न पावा। मति अनुमानि निगम अस गावा।।
बिनु पद[148] चलइ सुनइ बिनु काना। कर[149] बिनु करम करइ बिधि नाना।।
आनन[150] रहित सकल[151] रस भोगी। बिनु बानी[152] बकता[153] बड़ जोगी।।
तन बिनु परस[154] नयन बिनु देखा। ग्रहइ घ्रान[155] बिनु बास[156] असेषा[157]।।
असि सब भाँति अलौकिक करनी। महिमा जासु जाइ नहिं बरनी।।

---

127. भंडार 128. सर्वश्रेष्ठ 129. आरोपण, आरोप करना 130. जिसमें चेतना न हो, अचेतन 131. बादल 132. पर्दा 133. ढकना 134. सूर्य 135. देखना 136. आँख 137. चंद्रमा 138. धुआँ 139. धूल 140. जो हमेशा से मौजूद हो 141. प्रतीत होना 142. समान 143. चाँदी 144. पानी 145. झूठ 146. हटाना 147. है 148. पैर 149. हाथ 150. मुख 151. सभी 152. आवाज 153. वक्ता 154. स्पर्श 155. सूँघना 156. सुगंध 157. सभी प्रकार का

दो॰ जेहि इमि गावहिं बेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान।
सोइ दसरथ सुत भगत हित कोसलपति भगवान।।5।।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY